ओम् शान्ति 18-1-13 मधुबन

18 जनवरी स्मृति दिवस पर दादी जानकी जी का विशेष सन्देश

आज हमारे मीठे-मीठे बाबा का स्मृति दिवस 18 जनवरी है। यह जनवरी मास इतना पावरफुल है, जो जितनी शक्ति लेना चाहे ले सकता है। यही घड़ियां हैं मायाजीत, प्रकृति जीत बनने की। तो हमारी भावना है कि बाबा का एक एक बच्चा अव्यक्त पालना का ऐसा सबूत दे, बाबा ने जो पालना दी है, पढ़ाया है, इतना खजाना दिया है, तो कहाँ भी आंख नहीं डूबे।

भले शरीर कैसे भी पुराने होते जा रहे हैं, पर प्रकृति साथ दे रही है। बापदादा की छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं, इस निश्चय से निश्चयबुद्धि विजयन्ती हैं। सच्चे दिल पर साहेब राज़ी है। भक्ति में तो भावना का भाड़ा मिलता है, हमको तो बाबा ने भावना का स्वरूप बना दिया है, जिससे औरों को बल मिल रहा है। हमारी तो यही भावना है कि बाबा से जो पाया है वह सबको मिले। दुनिया को भगवान की प्रत्यक्ष पहचान मिले, उससे हमने क्या पाया है, उसका सब अनुभव करें।

हमने तो सारी लाइफ में एक बाबा के सिवाए और किसी को भी नहीं देखा है, एक बाबा को ही फालो किया है। भले हमारे पूर्वज फाउण्डेशन हैं, एक दो के साथी होकर रहे हैं। परन्तु इनमें भी ताकत भरने वाला हमारा ब्रह्मा बाबा है, बाबा ने ऐसी पालना दी है जो चारों ओर इतनी वृद्धि हो रही है।

आज हम सभी अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा का 44 वां पुण्य स्मृति दिवस मना रहे हैं। 20 हजार से भी अधिक भाई बहिनें सारे भारत और विदेशों से यहाँ पहुंचे हुए हैं। सभी बाबा की मिली हुई पालना और शिक्षाओं को याद करते, उनकी स्मृतियों में खोये हुए हैं। बाबा की मीठी-मीठी शिक्षायें सदा हर बच्चे के दिल में याद हैं। बाबा कहते बच्चे –

1- निश्चयबुद्धि विजयन्ती, निश्चय में विजय समाई हुई है। कभी अपने आप में, परमात्मा बाप में और इस कल्याणकारी समय में जरा भी संशय नहीं लाना। सब अच्छा हुआ है, अच्छा ही होना है।

2- सच्चे दिल पर साहेब राज़ी... सच्चे बच्चों पर बाप सदा खुश रहता है, दुआओं की बरसात करता है। उसे सच्चाई बहुत प्यारी है। जो हूँ, जैसी हूँ, बाबा मैं तेरी हूँ... अन्दर बाहर बहुत साफ और सच्चे रहना।

3- भाग्यवान वह है जिसे किसी का भी अवगुण दिखाई न दे। यह भी रिकार्ड हो कि सबके साथ संबंध में आते सदा गुणग्राही रहे हैं। जिसे सर्वगुण सम्पन्न बनना है, परमात्मा बाप से गुणों का वर्सा लेना है, वह सबसे गुण उठाता है। बाबा के गुणों में समान बनता है।

4- बाबा मैं तेरा हूँ, तू मेरा है... यही धुन लगी हुई है। मेरे मेरे को तेरे में बदल दिया तो बेफिकर

बादशाह हो गये। बेपरवाह नहीं हैं, लेकिन बेफिकर रहते हैं। बाबा ने सब फिकरातें ले ली, हिम्मते बच्चे मददे बाप का पक्का सौदा हो गया।

5- यह जीवन लम्बी यात्रा है। इस जीवन यात्रा में हम सबकुछ समेट के, समा के जा रहे हैं। जो कुछ हुआ, जो बीता उसे मर्ज कर लिया। अभी का यह बहुत वैल्युबुल समय है। बाबा ने हम सो, सो हम की पहचान दे दी। पहले आत्मा सो परमात्मा कहते थे, अब समझ मिली कि हम सो देवता थे, चक्कर लगाकर देवता से शूद्र समान बन गये। अब फिर से सो देवता बन रहे हैं।

6- दुआयें कभी मांगी नहीं जाती, जिनके संकल्प, वाणी, कर्म श्रीमत अनुसार हैं, जो सबको सुख देते हैं उन्हें दुआयें अपने आप मिलती हैं। जो दु:ख देते वा लेते हैं वह दुआओं के पात्र नहीं हैं।

7- सदा यही ध्यान रखना है कि रूहानियत में रहकर ईश्वरीय स्नेह खींच लूं। यही पढ़ाई का सार है। इसी से योग सहज लग जाता है। वरदान बाबा देता है, दुआयें सेवा से मिलती हैं।

8- आजकल किसी को भी शिक्षा नहीं दे सकते हैं, सभी बहुत सेन्सेटिव हैं। कोई शिक्षा सुनने के लिए तैयार नहीं है। पर स्नेह से समीप आते हैं तो खींच लेते हैं। जो सीखने की भावना वाले हैं वह जहाँ तहाँ से सीख रहे हैं।

9- अन्तर्मुखी सदा सुखी, बाह्यमुखता ही सबसे बड़ा दुश्मन है, इससे ही माया आती है। अन्तर्मुखता माया को भगा देती है इसलिए अन्तर को समझ करके उसको मन्त्र के रूप में अपना लो। अन्तर्मुखी बन जाओ तो कोई भी प्राबलम नहीं है।

10- बाबा ने हमको अपना बनाकर मुस्कराना सिखाया है। सदा मुस्कराते रहो। इसमें कोई बात मुश्किल नहीं है। ड्रामा में हर आत्मा का पार्ट अपना है। तुम यह जज करने में टाइम नहीं गंवाओ कि यह अच्छा है या नहीं। जो जिसका पार्ट है वह अच्छा बजावे यह हमारी भावना रहे। सदा मेरा स्वचिंतन, ईश्वर चिंतन चलता रहे।

तो आज 18 जनवरी का विशेष दिन है, इसी ख्याल से मैं अपने सभी भाई बहिनों को यह मीठी मीठी शिक्षायें याद दिला रही हूँ, इन्हें अपने जीवन में उतारते हमें बाबा के प्यार और पालना का रिटर्न देना है। अपनी जीवन से बापदादा को प्रत्यक्ष करना है। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ

सभी को बहुत-बहुत दिल से याद

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी